The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV, October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

22. भारतीय षड्दर्शन के शैक्षिक आधारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

मीना खत्री
शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ,राजस्थान
डॉ. मृदुला शर्मा
शोध निर्देशिका एवं असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षा शास्त्र विभाग
श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, हनुमानगढ, राजस्थान

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध में भारतीय दर्शन की समृद्ध परंपरा के अंतर्गत विकसित षड्दर्शनों—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदांत—के शैक्षिक आधारों का तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा एवं मूल्यमीमांसा के संदर्भ में विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि भारतीय षड्दर्शन शिक्षा को केवल बौद्धिक या सूचना-प्रधान प्रक्रिया के रूप में नहीं, बल्कि मानव के समग्र विकास का साधन मानते हैं।

तत्त्वमीमांसा के स्तर पर षड्दर्शनों ने आत्मा, चेतना, जगत, प्रकृति और परम सत्य की अवधारणाओं के माध्यम से शिक्षा को जीवन और अस्तित्व की गहन समझ से जोड़ा है। सांख्य और योग दर्शन चेतना एवं प्रकृति के संतुलन को शिक्षा का आधार बनाते हैं, न्याय और वैशेषिक दर्शन यथार्थबोध तथा तार्किक दृष्टि प्रदान करते हैं, मीमांसा दर्शन कर्तव्य और धर्म को शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण मानता है, जबकि वेदांत दर्शन आत्मबोध और सार्वभौमिक मानवता की चेतना को शिक्षा का चरम लक्ष्य स्वीकार करता है। ज्ञानमीमांसा के संदर्भ में यह अध्ययन दर्शाता है कि भारतीय षड्दर्शन ज्ञान को केवल बौद्धिक प्रक्रिया न मानकर अज्ञान-निवारण और सत्य-प्राप्ति का साधन मानते हैं। प्रमाण, तर्क, अनुभव, साधना और आत्मानुभव—इन सभी को शिक्षा की ज्ञानात्मक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। मूल्यमीमांसा के स्तर पर सत्य, विवेक, कर्तव्यनिष्ठा, आत्मसंयम, करुणा, अहिंसा और मोक्ष जैसे मूल्य शिक्षा के केंद्रीय उद्देश्यों के रूप में उभरकर सामने आते हैं।

निष्कर्षत: भारतीय षड्दर्शन शिक्षा को समग्र, मूल्यनिष्ठ, मानवकेंद्रित एवं आत्मोन्मुख बनाने का सशक्त दार्शनिक आधार प्रदान करते हैं। आधुनिक शिक्षा-परिदृश्य में, जहाँ नैतिक संकट, मानसिक असंतुलन और मानवीय संवेदनशीलता का ह्रास देखा जा रहा है, वहाँ भारतीय षड्दर्शनों पर आधारित शैक्षिक दृष्टि शिक्षा को अधिक संतुलित, अर्थपूर्ण और समाजोपयोगी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

बीज शब्द: भारतीय षड्दर्शन, शैक्षिक आधार, तत्त्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा, शिक्षा दर्शन।

प्रस्तावना

भारतीय दर्शन विश्व की प्राचीनतम, समृद्ध एवं सुसंस्कृत दार्शनिक परंपराओं में से एक है, जिसकी जड़ें भारतीय सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक चेतना में गहराई तक समाहित हैं। यह दर्शन केवल सैद्धांतिक चिंतन अथवा

तात्त्विक जिज्ञासा तक सीमित नहीं है, बल्कि मानव जीवन की समग्र व्याख्या प्रस्तुत करने वाली एक ऐसी जीवन-दृष्टि है, जो ज्ञान, आचरण, नैतिकता और आत्मिक उन्नयन के समन्वय पर आधारित है। भारतीय दर्शन का मूल उद्देश्य मानव जीवन के अंतिम लक्ष्य की खोज करते हुए व्यक्ति और समाज के समन्वित विकास का मार्ग प्रशस्त करना है। राधाकृष्णन (1951) के अनुसार भारतीय दर्शन जीवन से पृथक कोई अमूर्त विचार-प्रणाली नहीं है, बल्कि वह जीवन के प्रत्येक पक्ष को दिशा देने वाली सजीव चेतना है।

भारतीय दर्शन का विकास वैदिक काल से आरंभ होकर ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, सूत्र काल एवं उत्तरकाल तक एक क्रमिक, तार्किक एवं बौद्धिक प्रक्रिया के रूप में हुआ है। इस दीर्घ ऐतिहासिक विकास-क्रम में सूत्र काल का विशेष महत्व है, क्योंकि इसी काल में दार्शनिक चिंतन को सूत्रात्मक, संगठित एवं व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया गया। दासगुप्ता (1922) के अनुसार सूत्र काल ने भारतीय दर्शन को एक सुव्यवस्थित बौद्धिक अनुशासन का रूप दिया, जिससे दार्शनिक विचारों का शिक्षण, विवेचन एवं व्यावहारिक अनुप्रयोग संभव हो सका। इस काल में विकसित छह आस्तिक दर्शन—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा (वेदांत) सामूहिक रूप से 'षड्दर्शन' कहलाते हैं। षड्दर्शन भारतीय दर्शन की वह केंद्रीय धुरी हैं, जिनके माध्यम से ज्ञान, सत्य, मूल्य, कर्तव्य, आत्मा, जगत और मोक्ष जैसे मूल प्रश्नों का तार्किक एवं दार्शनिक समाधान प्रस्तुत किया गया है। ये दर्शन केवल दार्शनिक विमर्श तक सीमित न रहकर शिक्षा, नैतिकता और सामाजिक जीवन को भी गहराई से प्रभावित करते हैं। भारतीय षड्दर्शन ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा और तत्त्वमीमांसा के माध्यम से शिक्षा के मूल प्रश्नों—ज्ञान का स्वरूप, ज्ञान के साधन, शिक्षा का उद्देश्य, मानव जीवन का लक्ष्य तथा चरित्र निर्माण का सुसंगत उत्तर प्रस्तुत करते हैं।

दर्शन की ये तीनों मूल शाखाएँ—ज्ञानमीमांसा, मूल्यमीमांसा एवं तत्त्वमीमांसा शिक्षा को एक सुदृढ़ दार्शनिक आधार प्रदान करती हैं। ज्ञानमीमांसा ज्ञान की प्रकृति, स्रोत, सत्यता एवं प्रमाण से संबंधित प्रश्नों का विवेचन करती है और सीखने की प्रक्रिया, बौद्धिक विकास तथा सत्य-बोध को स्पष्ट दिशा प्रदान करती है। मूल्यमीमांसा नैतिक, सौंदर्यात्मक एवं सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करती है, जिसके माध्यम से शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक चेतना एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के विकास के रूप में परिभाषित होता है। तत्त्वमीमांसा सत्य, अस्तित्व, आत्मा, ब्रह्म एवं जगत की मूल प्रकृति पर विचार करते हुए शिक्षा को जीवन-दृष्टि, उद्देश्यबोध एवं समग्र चिंतन से जोड़ती है।

वर्तमान समय में, जब शिक्षा प्रणाली अत्यधिक उपयोगितावादी, तकनीक-प्रधान एवं रोजगारोन्मुख होती जा रही है, तब भारतीय षड्दर्शनों की शैक्षिक दृष्टि अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है। ये दर्शन शिक्षा को केवल ज्ञान-संचरण का माध्यम न मानकर मानव के बौद्धिक, नैतिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास की प्रक्रिया के रूप में स्थापित करते हैं। अतः भारतीय षड्दर्शनों के तत्त्वात्मक, ज्ञानात्मक एवं मूल्यात्मक आधारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन न केवल भारतीय दार्शनिक परंपरा की समझ को गहन करता है, बल्कि समकालीन शिक्षा को अधिक संतुलित, मूल्यनिष्ठ एवं मानवकेंद्रित बनाने की दिशा में भी सार्थक योगदान प्रदान करता है।

संबंधित साहित्य समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि भारतीय षड्दर्शन केवल दार्शनिक चिंतन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे शिक्षा के वैचारिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक एवं तार्किक आधारों को भी सुदृढ़ करते हैं। फातिमा, अंजुम (2010) ने षड्दर्शन में मन की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए उसे ज्ञान, प्रेरणा एवं कर्म का मूल स्रोत माना है। उनके अनुसार मन न केवल इंद्रियों के कार्यों का संचालन करता है, बल्कि उसका आध्यात्मिक महत्व भी संपूर्ण वैदिक साहित्य में स्वीकार किया गया है। हरियन्ना, एम. (2011) ने सांख्य एवं योग दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि जहाँ सांख्य दर्शन प्रकृति–पुरुष द्वैत पर आधारित है, वहीं योग दर्शन ईश्वर की अवधारणा को स्वीकार करते हुए मोक्षोन्मुख साधना को शिक्षा से जोड़ता है। भोलानाथ (2015) के अध्ययन में अद्वैत वेदांत एवं सांख्य दर्शन की सृष्टि-प्रक्रिया का तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए सत्य की सापेक्ष अभिव्यक्तियों पर प्रकाश डाला गया है, जो शैक्षिक चिंतन में बहुदृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। राजकिशोर (2017) ने षड्दर्शन समुच्चय में द्रव्य की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए पंचमहाभूतों को भौतिक जगत एवं शरीर-निर्माण का आधार बताया, जिससे शिक्षा में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को दार्शनिक समर्थन मिलता है। वहीं कौशल (2017) ने भारतीय दर्शन की ज्ञानमीमांसा के संदर्भ में शिक्षण कौशलों का विश्लेषण करते हुए प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द प्रमाण को शिक्षण विधियों से जोड़ा है। सिन्हा तथा ज्ञानधर (2018) के अध्ययनों में न्याय, वैशेषिक एवं सांख्य दर्शन की प्रमाण-मीमांसा को तार्किक चिंतन एवं आलोचनात्मक सोच के विकास से संबद्ध किया गया है, जिसे आधुनिक शिक्षा का अनिवार्य घटक माना गया है। कोइराला एवं अन्य (2021) ने षड्दर्शन एवं बौद्ध दर्शन में निहित वैज्ञानिक तत्वों को आधुनिक ज्ञानमीमांसा के अनुरूप बताया, विशेषतः योग के अष्टांग मार्ग को मन–शरीर–आत्मा के संतुलन हेतु उपयोगी माना। हाल के अध्ययनों (पिल्लई एवं जॉर्ज, 2024; मलिक, तौसीफ एवं जहरा, 2024; कुमार, 2023) में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि षड्दर्शनों में निहित बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य 21वीं सदी की शिक्षा को केवल तथ्यात्मक नहीं, बल्कि मूल्य-आधारित, मानवकेंद्रित एवं समग्र बनाने की क्षमता रखते हैं।

समग्रतः, पूर्ववर्ती साहित्य यह प्रमाणित करता है कि भारतीय षड्दर्शन शिक्षा को तार्किकता, नैतिकता, आत्मबोध एवं समग्र विकास का दार्शनिक आधार प्रदान करते हैं, जिससे प्रस्तुत शोध विषय की प्रासंगिकता और भी सुदृढ़ होती है।

शोध की आवश्यकता

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि शिक्षा अपनी सार्थकता, दिशा एवं मानवीय उद्देश्य से धीरे-धीरे विमुख होती जा रही है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में ज्ञान और सूचना की प्रचुरता तो उपलब्ध है, किंतु उनमें विवेक, संवेदनशीलता, नैतिकता तथा जीवनोपयोगी मूल्यों का अभाव दिखाई देता है। प्रतिस्पर्धा, भौतिकवाद, उपभोक्तावाद एवं व्यवसायीकरण की प्रवृत्तियों ने शिक्षा को मानव-केन्द्रित प्रक्रिया के स्थान पर एक यांत्रिक और परिणाम-केन्द्रित व्यवस्था में परिवर्तित कर दिया है। विद्यालय एवं विश्वविद्यालय आज ज्ञान प्रदान करने के केन्द्र तो बन गए हैं, किंतु ज्ञान के व्यावहारिक उपयोग, मूल्य-आधारित जीवन तथा व्यक्तित्व निर्माण के पक्ष अपेक्षाकृत उपेक्षित रह गए हैं।

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV, October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

ऐसी स्थिति में शिक्षा को पुनः उसके दार्शनिक एवं मूल्यात्मक आधारों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है, जिससे वह केवल सूचना प्रदान करने की प्रक्रिया न रहकर मानव जीवन को सार्थक दिशा देने वाली प्रक्रिया बन सके। इसी संदर्भ में भारतीय दर्शन की प्राचीन एवं समृद्ध परंपरा, विशेष रूप से भारतीय षड्दर्शन—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदांत अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। ये दर्शन न केवल सत्य और ज्ञान की खोज तक सीमित हैं, बल्कि मानव जीवन को संतुलित, विवेकशील, नैतिक और उद्देश्यपूर्ण बनाने की समग्र दृष्टि प्रदान करते हैं। भारतीय षड्दर्शनों में ज्ञान, कर्म, अनुशासन, तर्क, अनुभव, नैतिकता एवं आत्मबोध जैसे शैक्षिक तत्त्वों का समन्वय दृष्टिगोचर होता है, जो आधुनिक शिक्षा की अनेक समस्याओं के समाधान की क्षमता रखते हैं।

शोध उद्देश्य

1. भारतीय षड्दर्शनों (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत) की तत्त्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा एवं मूल्य मीमांसा (दार्शनिक पृष्ठभूमि) का अध्ययन करना।
2. भारतीय षड्दर्शनों (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत) के शैक्षिक आधार का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में दार्शनिक-विश्लेषणात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु भारतीय षड्दर्शनों से संबंधित प्राथमिक ग्रंथों एवं द्वितीयक शोध साहित्य का तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे उनके शैक्षिक आधारों की पहचान की जा सके।

भारतीय षड्दर्शनों की दार्शनिक पृष्ठभूमि

1.सांख्य दर्शन

1) तत्त्व मीमांसा - सांख्य दर्शन द्वैतवादी दर्शन है, जिसमें पुरुष (चेतन तत्त्व) और प्रकृति (अचेतन तत्त्व) को सृष्टि के मूल कारण के रूप में स्वीकार किया गया है। पुरुष शुद्ध चेतना है, जबकि प्रकृति त्रिगुणात्मक (सत्त्व, रजस, तमस) होकर समस्त भौतिक एवं मानसिक क्रियाओं की आधारभूमि है। यह तत्त्वमीमांसा मानव जीवन में चेतना एवं भौतिकता के संतुलन को स्वीकार करती है, जो शिक्षा के समग्र दृष्टिकोण का दार्शनिक आधार बनती है।

2)ज्ञान मीमांसा - सांख्य दर्शन में ज्ञान की प्राप्ति के तीन प्रमाण माने गए हैं— प्रत्यक्ष, अनुमान एवं शब्द। प्रत्यक्ष ज्ञान इंद्रियों एवं मन के माध्यम से प्राप्त अनुभव पर आधारित है, अनुमान तर्क एवं विवेक से उत्पन्न होता है तथा शब्द प्रमाण प्रामाणिक ग्रंथों एवं आचार्यों के कथनों पर आधारित है। मन (मानस) को ज्ञान-प्रक्रिया का सक्रिय उपकरण माना गया है, क्योंकि वही इंद्रियों से प्राप्त अनुभवों को संगठित कर बौद्धिक विवेक में रूपांतरित करता है। इस प्रकार सांख्य दर्शन ज्ञान को केवल सूचना नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण चेतना के रूप में स्वीकार करता है।

3)मूल्य मीमांसा - सांख्य दर्शन का सर्वोच्च मूल्य मोक्ष है, जिसे आत्मा की स्वतंत्रता एवं दुःख-निवृत्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। त्रिगुण सिद्धांत के माध्यम से यह दर्शन नैतिक मूल्यों का निर्धारण करता है—

सत्त्व : शुद्धता, विवेक, शांति एवं आत्मसंयम

रजस : कर्मशीलता, सक्रियता एवं सांसारिक प्रवृत्ति

तमस : अज्ञान, जड़ता एवं अविवेक

मानव का नैतिक लक्ष्य सत्त्वगुण की वृद्धि एवं रजस–तमस का संयमन है। यह मूल्यमीमांसा शिक्षा को आंतरिक अनुशासन, आत्मनियंत्रण एवं नैतिक विकास की दिशा प्रदान करती है।

2.योग दर्शन

1)तत्त्वमीमांसा - योग दर्शन की तत्त्वमीमांसा पुरुष, प्रकृति एवं ईश्वर—इन तीन शाश्वत तत्त्वों पर आधारित है। यह दर्शन ईश्वर को सृष्टि का नियामक स्वीकार करता है, अतः यह आस्तिक दर्शन है। योग दर्शन के अनुसार सृष्टि चेतना और प्रकृति की परस्पर क्रिया का परिणाम है, तथा आत्मा की मुक्ति का मार्ग चित्तवृत्तियों के निरोध से प्रशस्त होता है। इस तत्त्वदृष्टि में आत्मा की शुद्धता, स्वतंत्रता एवं ईश्वर-संयोजन को केंद्रीय स्थान प्राप्त है।

2) ज्ञान मीमांसा - योग दर्शन में ज्ञान को केवल बौद्धिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि अनुभवजन्य एवं साधनात्मक प्रक्रिया माना गया है। ज्ञान के तीन प्रमाण स्वीकार किए गए हैं— प्रत्यक्ष, अनुमान एवं आगम (शब्द)। यहाँ मन, बुद्धि और अहंकार को ज्ञान के उपकरण माना गया है, जबकि वास्तविक ज्ञाता आत्मा है। योग दर्शन के अनुसार चित्तवृत्तियों के नियंत्रण के बिना सत्य ज्ञान संभव नहीं है। ज्ञान की सर्वोच्च अवस्था समाधि है, जहाँ ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय का भेद समाप्त हो जाता है। इस प्रकार योग दर्शन ज्ञान को मानसिक शुद्धि एवं आत्मानुभूति से जोड़ता है।

3)मूल्य मीमांसा - योग दर्शन की मूल्यमीमांसा का केंद्र नैतिक अनुशासन और आध्यात्मिक उत्थान है। इसका उद्देश्य केवल ज्ञान प्राप्ति नहीं, बल्कि नैतिक, मानसिक एवं आत्मिक विकास है। अष्टांग योग के अंतर्गत वर्णित यम एवं नियम योग दर्शन के नैतिक मूल्यों का आधार हैं—जैसे अहिंसा, सत्य, संयम, संतोष, आत्मशुद्धि एवं ईश्वर-प्रणिधान। योग दर्शन के अनुसार नैतिकता सामाजिक व्यवस्था का साधन मात्र नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि एवं मुक्ति की अनिवार्य शर्त है।

3. न्याय दर्शन

1) तत्त्वमीमांसा - न्याय दर्शन का मूल तत्त्व यह है कि यथार्थ ज्ञान ही मोक्ष का मार्ग है। यह दर्शन आत्मा, ईश्वर, जगत और मोक्ष चार मूल सत्यों की तार्किक व्याख्या करता है। आत्मा को शाश्वत, चेतन तत्त्व तथा ईश्वर को सर्वज्ञ एवं सृष्टि का नियामक स्वीकार किया गया है। कर्म, पुनर्जन्म और मोक्ष की अवधारणाएँ न्याय दर्शन में स्पष्ट रूप से स्थापित हैं। इस तत्त्वमीमांसा का उद्देश्य जगत के तत्त्वों का यथार्थ ज्ञान प्रदान कर अज्ञान का नाश करना है।

2) ज्ञान मीमांसा - न्याय दर्शन की केन्द्रीय विशेषता उसकी प्रमाणमीमांसा है। इसमें ज्ञान को आत्मा का गुण माना गया है, जो मन और इन्द्रियों के संयोग से उत्पन्न होता है। ज्ञान के चार प्रमाण—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द स्वीकार किए गए हैं। यह दर्शन यथार्थवाद का समर्थन कर, मानता है कि ज्ञान तभी सत्य है जब वह वस्तु की वास्तविकता के अनुरूप हो। इस प्रकार न्याय दर्शन अनुभव और तर्क के संतुलन द्वारा वैज्ञानिक एवं आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करता है।

3) मूल्य मीमांसा - न्याय दर्शन की मूल्यमीमांसा का केंद्र सत्य, विवेक और तार्किकता है। इसका अंतिम मूल्य मोक्ष है, जो अज्ञान के नाश और दुःखों की निवृत्ति से प्राप्त होता है। न्याय दर्शन यह स्पष्ट करता है कि सत्य ज्ञान से

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV, October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

ही राग, द्वेष और मोह जैसे दोषों का क्षय संभव है। इस दर्शन में नैतिकता ज्ञान-आधारित है, अर्थात् सही ज्ञान ही सही आचरण का आधार है।

4. वैशेषिक दर्शन

1) तत्त्वमीमांसा - वैशेषिक दर्शन यथार्थवाद एवं अनुभववाद पर आधारित है। यह सृष्टि को अणुओं (परमाणुओं) के संयोग–वियोग का परिणाम मानता है तथा पदार्थों के तार्किक एवं वैज्ञानिक वर्गीकरण पर बल देता है। इस दर्शन में ईश्वरवाद और अणुवाद का समन्वय मिलता है। पदार्थ, गुण, कर्म आदि तत्त्वों के विश्लेषण द्वारा यह दर्शन जगत की वास्तविक संरचना को समझाने का प्रयास करता है।

2)ज्ञान मीमांसा - वैशेषिक दर्शन के अनुसार सत्य ज्ञान ही दुःख-निवृत्ति एवं मोक्ष का साधन है। ज्ञान को आत्मा का गुण माना गया है, जिसकी उत्पत्ति आत्मा, मन और इन्द्रियों के संयोग से होती है। ज्ञान के दो प्रमुख प्रमाण माने गए हैं— प्रत्यक्ष और अनुमान। यह दर्शन यथार्थवाद का समर्थन करता है और मानता है कि ज्ञान तभी सत्य है जब वह वस्तु की वास्तविकता के अनुरूप हो। इस प्रकार वैशेषिक दर्शन अनुभव और तर्क के संतुलन से वैज्ञानिक चिंतन को प्रोत्साहित करता है।

3) मूल्य मीमांसा - वैशेषिक दर्शन की मूल्यमीमांसा का केंद्र सत्य, विवेक और मोक्ष है। इसका अंतिम लक्ष्य अज्ञान, राग-द्वेष और दुःख से मुक्ति है। यह दर्शन स्पष्ट करता है कि ज्ञान का उद्देश्य केवल बौद्धिक नहीं, बल्कि नैतिक एवं आत्मिक शुद्धि भी है। सही ज्ञान से ही व्यक्ति में विवेक, संयम और नैतिक आचरण का विकास संभव होता है।

5. मीमांसा दर्शन

1) तत्त्वमीमांसा - मीमांसा दर्शन की तत्त्वमीमांसा इस सिद्धांत पर आधारित है कि वेद नित्य, अपौरुषेय एवं स्वयंप्रमाण हैं। यह दर्शन सृष्टि के तात्त्विक रहस्यों से अधिक धर्म, कर्तव्य और कर्म की नैतिक–क्रियात्मक संरचना पर केंद्रित है। मीमांसा के अनुसार जगत एक नियमबद्ध नैतिक व्यवस्था है, जिसका संचालन कर्म–फल सिद्धांत से होता है। अतः इसका मूल तत्त्व "कर्तव्य का तत्त्व" है, न कि ईश्वर या ब्रह्म का दार्शनिक विवेचन।

2) ज्ञान मीमांसा - मीमांसा दर्शन में ज्ञान को आत्मा का गुण माना गया है और यथार्थ ज्ञान को कर्म और धर्म के निर्णय का आधार स्वीकार किया गया है। इस दर्शन की केन्द्रीय विशेषता इसकी प्रमाणमीमांसा है, जिसमें छः प्रमाण माने गए हैं— प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि और शब्द। इनमें शब्द (वेद) को सर्वोच्च प्रमाण माना गया है, क्योंकि वे अपौरुषेय हैं। ज्ञान का उद्देश्य यहाँ बौद्धिक जिज्ञासा नहीं, बल्कि धर्मसंगत कर्म का मार्गदर्शन है।

3) मूल्य मीमांसा - मीमांसा दर्शन की मूल्यमीमांसा का केंद्र धर्म, कर्तव्यनिष्ठा और कर्मपालन है। इसका मानना है कि नैतिक जीवन का आधार वेदविहित कर्म हैं। धर्म का अर्थ केवल आस्था नहीं, बल्कि विधि–निषेध द्वारा निर्देशित आचरण है। मोक्ष भी यहाँ धर्मानुकूल कर्मों के परिणामस्वरूप आत्मशुद्धि के रूप में स्वीकार किया गया है। इस प्रकार मीमांसा दर्शन नैतिकता को कर्तव्यप्रधान जीवन-दृष्टि के रूप में स्थापित करता है।

6. वेदांत दर्शन

1) तत्त्वमीमांसा - वेदांत दर्शन की तत्त्वमीमांसा का केंद्र अद्वितीय ब्रह्म है। ब्रह्म ही सृष्टि का मूल तथा अंतिम कारण है। आत्मा शुद्ध, नित्य और चेतन तत्त्व है, जो शरीर एवं इन्द्रियों से भिन्न है। जगत को वेदांत मिथ्या नहीं, बल्कि अनुभवजन्य एवं अस्थायी यथार्थ मानता है। इस प्रकार वेदांत विविधता में निहित एकता का दर्शन प्रस्तुत करता है और मोक्ष को आत्मा के वास्तविक स्वरूप की अनुभूति के रूप में स्वीकार करता है।

2) ज्ञान मीमांसा - वेदांत में ज्ञान को केवल बौद्धिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि आत्मानुभव माना गया है। ज्ञान के प्रमुख प्रमाण प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द (श्रुति) हैं, जिनमें श्रुति को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। अज्ञान (अविद्या) को बंधन का कारण और ज्ञान को ही मोक्ष का साधन माना गया है। वास्तविक ज्ञान वह है, जो आत्मा–ब्रह्म की एकता का बोध कराए।

3) मूल्य मीमांसा - वेदांत दर्शन की मूल्यमीमांसा का केंद्र सत्य, करुणा, आत्मसंयम और प्रेम है। जब सभी प्राणियों में एक ही आत्मा का बोध होता है, तब अहिंसा, दया और सेवा स्वाभाविक मूल्य बन जाते हैं। इसका सर्वोच्च मूल्य मोक्ष है, जो पूर्ण स्वतंत्रता, शांति और आनंद की अवस्था है। इस दर्शन में ज्ञान, भक्ति और नैतिक आचरण—तीनों का समन्वय मिलता है।

भारतीय षड्दर्शनों का शैक्षिक आधार

1) भारतीय षड्दर्शनों की तत्त्वमीमांसा मे निहित शैक्षिक आधार

भारतीय षड्दर्शनों की तत्त्वमीमांसा शिक्षा को एक ऐसी दार्शनिक दृष्टि प्रदान करती है, जिसमें मानव जीवन को केवल भौतिक अस्तित्व तक सीमित न मानकर चेतना, आत्मा, जगत और परम सत्य के समन्वित रूप में देखा गया है। सांख्य दर्शन आत्मा और प्रकृति के द्वैत के माध्यम से यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा का उद्देश्य विवेक उत्पन्न कर चेतन और अचेतन के भेद का बोध कराना है। योग दर्शन इस तत्त्वमीमांसा को व्यवहारिक आधार प्रदान करते हुए मन, चित्त और वृत्तियों के अनुशासन द्वारा आत्मोन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। न्याय और वैशेषिक दर्शन तत्त्वमीमांसा को यथार्थवादी और वैज्ञानिक आधार देते हैं, जहाँ आत्मा, जगत और पदार्थों के स्वरूप का तार्किक एवं वस्तुनिष्ठ विश्लेषण किया गया है। इससे शिक्षा में यथार्थबोध, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और वस्तुगत चिंतन को बल मिलता है। मीमांसा दर्शन तत्त्वमीमांसा को नैतिक-क्रियात्मक धरातल पर स्थापित करते हुए धर्म और कर्तव्य को सृष्टि की नैतिक व्यवस्था का आधार मानता है, जिससे शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व से जुड़ता है। वेदांत दर्शन इन सभी दृष्टियों को समेकित करते हुए आत्मा और ब्रह्म की अद्वैत एकता का प्रतिपादन करता है, जिससे शिक्षा का चरम लक्ष्य आत्मबोध और सार्वभौमिक मानवता का विकास बनता है। इस प्रकार षड्दर्शनों की तत्त्वमीमांसा शिक्षा को यह शैक्षिक आधार प्रदान करती है कि शिक्षार्थी को केवल कौशलयुक्त या जानकारी-सम्पन्न नहीं, बल्कि आत्मचेतस, संतुलित और जीवन के गहन अर्थ को समझने वाला व्यक्ति बनाया जाए। यह तत्त्वात्मक दृष्टि आधुनिक शिक्षा में समग्रता, मानव-केंद्रितता और जीवनोपयोगी दृष्टिकोण के विकास का सशक्त आधार बनती है।

2)भारतीय षड्दर्शनों की ज्ञानमीमांसा मे निहित शैक्षिक आधार

The Asian Thinker

भारतीय षड्दर्शनों की ज्ञानमीमांसा शिक्षा को ज्ञान की प्रकृति, स्रोत और सत्यता के विषय में एक व्यापक और संतुलित दृष्टि प्रदान करती है। इन दर्शनों के अनुसार ज्ञान केवल सूचना का संचय नहीं, बल्कि अज्ञान के निवारण और सत्य की प्राप्ति का साधन है। न्याय और वैशेषिक दर्शन प्रमाण-आधारित ज्ञान को शिक्षा का मूल आधार मानते हैं, जहाँ प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और शब्द जैसे प्रमाणों के माध्यम से यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति होती है। इससे शिक्षा में तार्किक सोच, विश्लेषणात्मक क्षमता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है। सांख्य दर्शन ज्ञान को विवेक का परिणाम मानते हुए शिक्षा को आत्मा और प्रकृति के भेदबोध की ओर उन्मुख करता है, जबकि योग दर्शन ज्ञान को अनुभव और साधना से जोड़कर शिक्षा में मानसिक अनुशासन, एकाग्रता और आत्मनियंत्रण को अनिवार्य बनाता है। मीमांसा दर्शन ज्ञान को कर्म और धर्म से जोड़ते हुए यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानना नहीं, बल्कि सही कर्म की दिशा निर्धारित करना है। इससे शिक्षा व्यावहारिक, सामाजिक और नैतिक रूप से उत्तरदायी बनती है। वेदांत दर्शन ज्ञान को आत्मानुभव के रूप में स्थापित करता है और यह प्रतिपादित करता है कि आत्मा-ब्रह्म की एकता का बोध ही सर्वोच्च ज्ञान है। इस दृष्टि से शिक्षा का लक्ष्य आत्मसाक्षात्कार और आंतरिक रूपांतरण बनता है। समग्र रूप से षड्दर्शनों की ज्ञानमीमांसा शिक्षा को प्रमाण, तर्क, अनुभव, साधना और आत्मबोध—इन सभी का समन्वित रूप प्रदान करती है, जिससे शिक्षा न तो केवल बौद्धिक बनती है और न ही केवल आध्यात्मिक, बल्कि संतुलित और जीवनोपयोगी ज्ञान-प्रणाली के रूप में विकसित होती है।

3)भारतीय षड्दर्शनों की मूल्यमीमांसा मे निहित शैक्षिक आधार

भारतीय षड्दर्शनों की मूल्यमीमांसा शिक्षा को एक सुदृढ़ नैतिक और मानवीय आधार प्रदान करती है, जिसमें जीवन के अंतिम लक्ष्य के रूप में आत्मिक शुद्धि और मोक्ष को स्वीकार किया गया है। मीमांसा दर्शन कर्तव्य, धर्म और अनुशासित आचरण को शिक्षा का केंद्रीय मूल्य मानता है, जिससे शिक्षार्थी में उत्तरदायित्वबोध और नैतिक दृढ़ता का विकास होता है। न्याय और वैशेषिक दर्शन सत्य, विवेक और तर्कशीलता को मूल्यों के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं, जो शिक्षा में आलोचनात्मक चिंतन और बौद्धिक ईमानदारी को प्रोत्साहित करते हैं। सांख्य दर्शन विवेक और आत्मज्ञान को नैतिक उत्थान का आधार मानता है, जबकि योग दर्शन आत्मसंयम, अनुशासन और मानसिक शुद्धि को शिक्षा के मूल्यात्मक लक्ष्य के रूप में स्थापित करता है। वेदांत दर्शन मूल्यमीमांसा को उच्चतम स्तर पर ले जाकर करुणा, प्रेम, अहिंसा और सार्वभौमिक मानवता को शिक्षा के केंद्रीय मूल्य बनाता है।

भारतीय षड्दर्शनों के शैक्षिक आधारों का विश्लेषणात्मक विवेचन

भारतीय षड्दर्शन—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत—शिक्षा को केवल सूचना-प्राप्ति की प्रक्रिया न मानकर उसे मानव के समग्र बौद्धिक, नैतिक, मानसिक और आत्मिक विकास का माध्यम मानते हैं। इन दर्शनों की तत्त्वमीमांसा शिक्षा को यह आधार प्रदान करती है कि मानव जीवन चेतना और भौतिकता, आत्मा और जगत, व्यक्ति और समाज—इन सभी के संतुलन पर आधारित है। सांख्य दर्शन जहाँ विवेक के माध्यम से आत्मा और प्रकृति के भेद का बोध कराता है, वहीं योग दर्शन मानसिक अनुशासन और आत्मसंयम को शिक्षा का अनिवार्य अंग मानता है। न्याय और वैशेषिक दर्शन शिक्षा में तार्किकता, यथार्थबोध और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को प्रतिष्ठित करते हैं, जबकि मीमांसा दर्शन शिक्षा को कर्तव्यबोध, अनुशासित आचरण और नैतिक कर्म से जोड़ता है। वेदांत

दर्शन इन सभी को एक उच्च स्तर पर समाहित करते हुए शिक्षा को आत्मबोध, करुणा और सार्वभौमिक मानवता की चेतना से जोड़ता है।

षड्दर्शनों की ज्ञानमीमांसा शिक्षा को यह स्पष्ट दिशा प्रदान करती है कि ज्ञान केवल बौद्धिक संचय नहीं, बल्कि सत्य की खोज और अज्ञान के निवारण की प्रक्रिया है। न्याय और वैशेषिक दर्शन प्रमाण, तर्क और अनुभव पर आधारित ज्ञान को शैक्षिक आधार बनाते हैं, जिससे आलोचनात्मक चिंतन और वैज्ञानिक मानसिकता का विकास होता है। सांख्य और योग दर्शन ज्ञान को विवेक और अनुभवजन्य साधना से जोड़कर शिक्षा में आत्मनियंत्रण, एकाग्रता और मानसिक संतुलन को महत्व देते हैं। मीमांसा दर्शन में ज्ञान का उद्देश्य कर्म को दिशा देना है, जिससे शिक्षा व्यावहारिक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बनती है। वेदांत दर्शन ज्ञान को आत्मानुभव के रूप में परिभाषित करता है, जिससे शिक्षा का लक्ष्य आत्म-साक्षात्कार और आंतरिक रूपांतरण बनता है।

षड्दर्शनों की मूल्यमीमांसा शिक्षा को मूल्य-आधारित जीवन-दृष्टि प्रदान करती है। सत्य, विवेक, अहिंसा, करुणा, कर्तव्यनिष्ठा, आत्मसंयम और मोक्ष—ये सभी मूल्य शिक्षा के केंद्रीय लक्ष्य के रूप में उभरते हैं। मीमांसा दर्शन जहाँ कर्तव्य और नैतिक कर्म को सर्वोच्च मूल्य मानता है, वहीं न्याय और वैशेषिक दर्शन सत्य और विवेक को शिक्षा का नैतिक आधार बनाते हैं। योग दर्शन आत्मसंयम और आंतरिक अनुशासन को शैक्षिक मूल्य के रूप में स्थापित करता है, जबकि वेदांत दर्शन शिक्षा को सार्वभौमिक करुणा, प्रेम और मानव-एकता की चेतना से जोड़ता है। इस प्रकार षड्दर्शन शिक्षा को केवल रोजगारोन्मुख न बनाकर चरित्र-निर्माण, नैतिक चेतना और आत्मिक उत्थान की दिशा में उन्मुख करते हैं।

समग्रतः, भारतीय षड्दर्शनों के तत्त्वात्मक, ज्ञानात्मक और मूल्यात्मक आयामों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वे शिक्षा को समग्र, मानवकेंद्रित, मूल्यनिष्ठ और आत्मोन्मुख प्रक्रिया के रूप में स्थापित करते हैं। आधुनिक शिक्षा-परिदृश्य में, जहाँ बौद्धिक दक्षता के साथ-साथ नैतिकता, मानसिक स्वास्थ्य और मानवीय संवेदनशीलता की आवश्यकता बढ़ रही है, वहाँ षड्दर्शनों पर आधारित शैक्षिक दृष्टि शिक्षा को संतुलित, अर्थपूर्ण और दीर्घकालिक रूप से उपयोगी बना सकती है।

निष्कर्ष

इस अध्ययन से निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय षड्दर्शन शिक्षा को केवल सूचना, कौशल अथवा व्यावसायिक दक्षता तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे मानव के समग्र व्यक्तित्व विकास का साधन मानते हैं, जिसमें बौद्धिक, नैतिक, मानसिक और आत्मिक—सभी आयामों का संतुलित विकास निहित है।

तत्त्वमीमांसा के स्तर पर षड्दर्शनों ने शिक्षा को जीवन और अस्तित्व की गहन समझ से जोड़ा है। सांख्य और योग दर्शन चेतना एवं प्रकृति के संतुलन को शिक्षा का आधार बनाते हैं, न्याय और वैशेषिक दर्शन यथार्थबोध तथा वस्तुगत विश्लेषण की दृष्टि प्रदान करते हैं, मीमांसा दर्शन कर्तव्य और नैतिक व्यवस्था को शिक्षा से जोड़ता है, जबकि वेदांत दर्शन शिक्षा को आत्मबोध और सार्वभौमिक मानवता की चेतना से समृद्ध करता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय षड्दर्शन शिक्षा को मानव-केंद्रित और जीवनोपयोगी दृष्टि प्रदान करते हैं।

The Asian Thinker

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-7 Volume: IV, October-December, 2025
Issue-28 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

ज्ञानमीमांसा के संदर्भ में यह स्पष्ट हुआ कि भारतीय षड्दर्शन ज्ञान को केवल बौद्धिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि सत्य की खोज और अज्ञान के निवारण का माध्यम मानते हैं। न्याय और वैशेषिक दर्शन प्रमाण, तर्क और अनुभव के माध्यम से आलोचनात्मक एवं वैज्ञानिक चिंतन को विकसित करते हैं। सांख्य और योग दर्शन ज्ञान को विवेक और साधना से जोड़ते हैं, मीमांसा दर्शन ज्ञान को कर्म की दिशा निर्धारित करने वाला तत्व मानता है, जबकि वेदांत दर्शन ज्ञान को आत्मानुभव और आत्मसाक्षात्कार के रूप में प्रतिष्ठित करता है। इस प्रकार भारतीय षड्दर्शनों की ज्ञानमीमांसा शिक्षा को तार्किकता, अनुभव, अनुशासन और आत्मबोध—सभी का संतुलित आधार प्रदान करती है।

मूल्यमीमांसा के स्तर पर षड्दर्शनों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। सत्य, विवेक, कर्तव्यनिष्ठा, आत्मसंयम, करुणा, अहिंसा और मोक्ष जैसे मूल्य शिक्षा के केंद्रीय लक्ष्य के रूप में उभरकर सामने आते हैं। मीमांसा दर्शन जहाँ कर्तव्य और नैतिक कर्म को सर्वोच्च मूल्य मानता है, वहीं योग दर्शन आत्मसंयम और अनुशासन को, न्याय दर्शन सत्य और विवेक को तथा वेदांत दर्शन करुणा, प्रेम और मानव-एकता को शिक्षा के मूल मूल्य के रूप में स्थापित करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय षड्दर्शन शिक्षा को चरित्र-निर्माण और नैतिक चेतना के विकास का सशक्त माध्यम बनाते हैं।

समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीय षड्दर्शन आधुनिक शिक्षा की उन सीमाओं को दूर करने की क्षमता रखते हैं, जहाँ शिक्षा केवल रोजगारोन्मुख या तकनीक-प्रधान बनती जा रही है। षड्दर्शनों पर आधारित शैक्षिक दृष्टि शिक्षा को समग्र, मूल्यनिष्ठ, मानवतावादी और आत्मोन्मुख बनाती है। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में, जहाँ मानसिक स्वास्थ्य, नैतिक संकट और सामाजिक विघटन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, वहाँ भारतीय षड्दर्शनों से प्रेरित शिक्षा-दृष्टि शिक्षा को संतुलित, अर्थपूर्ण और दीर्घकालिक रूप से उपयोगी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ सूची

1. आर्य राज किशोर. (2017). षड्दर्शन समुच्चय में द्रव्य का स्वरूपः एक अनुशीलन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ संस्कृत रिसर्च अनंता*, *3*(3), 397–401.
2. कोइराला, के. पी., कोइराला, बी. एन., एवं गुरूंग, जी. पी. (2021). षड्दर्शन और बौद्ध दर्शन में निहित विज्ञान की ज्ञानमीमांसीय समझ. *स्पेस एंड कल्चर, इंडिया*, *9*(2), 71–80.
3. कौशल, राजीव. (2017). भारतीय दर्शन की प्रमाणमीमांसा के संदर्भ में प्रमुख सूक्ष्म शिक्षण कौशलों पर षड्दर्शन का प्रतिबिंब. *स्कॉलरली रिसर्च जर्नल फॉर इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज*, *4*(31), 5079–5095.
4. कुमार, आनंद. (2023). समकालीन शिक्षा में षड्दर्शन की प्रासंगिकता. *जर्नल ऑफ इंडियन स्टडीज*, *11*(1), 52–64.
5. कणाद. (2003). *वैशेषिक सूत्र* (एन. सी. मिश्रा, अनुवादक). चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान.
6. दासगुप्ता, एस. (1922). *अ हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलॉसफी* (खंड 1). कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

7. पतंजलि. (2014). *पतंजलि के योगसूत्र* (एस. राधाकृष्णन एवं सी. ए. मूर, संपादक; एस. वुड्स, अनुवादक). मोतीलाल बनारसीदास. (मूल कृति लगभग द्वितीय शताब्दी ई.पू.)
8. पिल्लई, डी., एवं जॉर्ज, एम. (2024). इक्कीसवीं सदी की शिक्षा में षड्दर्शन के संज्ञानात्मक और नैतिक आयाम. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल थॉट*, *15*(2), 56–70.
9. फातिमा अंजुम. (2010). *षड्दर्शन में मन की अवधारणा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन* (अप्रकाशित शोध प्रबंध). संस्कृत विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय.
10. भारत सरकार. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
11. जैमिनि. (1999). *पूर्व मीमांसा सूत्र* (गंगानाथ झा, अनुवादक). मोतीलाल बनारसीदास. (मूल कृति लगभग तृतीय शताब्दी ई.पू.)
12. मलिक, तौसीफ, एवं जहरा, अनम. (2024). षड्दर्शन की ज्ञानमीमांसा द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तर्कशीलता का संवर्धन: प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली का पुनरावलोकन. *आसरा यूजीसी केयर ग्रुप–1 अंतरराष्ट्रीय जर्नल*, *13*(3), 45–58.
13. राधाकृष्णन, एस. (1951). *इंडियन फिलॉसफी* (खंड 1–2). जॉर्ज ऐलन एंड अनविन.
14. राधाकृष्णन, एस. (1956). *फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन*. जॉर्ज ऐलन एंड अनविन.
15. विवेकानंद, स्वामी. (2009). *एजुकेशन*. अद्वैत आश्रम.
16. शर्मा, आर. एन. (2014). *फिलॉसॉफिकल एंड सोशियोलॉजिकल फाउंडेशन्स ऑफ एजुकेशन*. आर. लाल बुक डिपो.
17. शंकराचार्य. (2008). *ब्रह्मसूत्र भाष्य* (स्वामी गंभीरानंद, अनुवादक). अद्वैत आश्रम.
18. सिंह, आर. पी. (2012). *इंडियन फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन*. कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी.
19. त्रिपाठी, आर. (2010). *एजुकेशन इन इंडियन फिलॉसफी*. कनिष्क पब्लिशर्स.
20. सिन्हा, आर. (2018). भारतीय तर्कशास्त्र और शिक्षा के विकास में न्याय एवं वैशेषिक दर्शनों की भूमिका. *फिलॉसफी टुडे*, *62*(4), 52–63.
21. हरियन्ना, एम. (2011). *भारतीय दर्शन की रूपरेखा*. राजकमल प्रकाशन. (पृष्ठ 266–296)
22. ज्ञानधर. (2018). सांख्य दर्शन में प्रमाण विमर्श. *शोध शौर्य इंटरनेशनल साइंटिफिक रिफ्रेड रिसर्च जर्नल*, *1*(3), 44–48.

The Asian Thinker